10 / 01 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

कर्म करते कर्म के बन्धनों से परे कर्मातीत स्टेज का अनुभव

➢➢ नॉलिज के दर्पण में मैं आत्मा...

➢➢ देख रही हूँ अपनी कर्मातीत अवस्था का चित्र...

➳ _ ➳ कर्म करते भी मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा...

➳ _ ➳ कर्म बंधन से मुक्त हूँ...

→ देख रही हूँ मेरे मस्तक पर चमकती...

→ दिव्य गुणों की मणियां...

- हर गुण की चमक विशेष हैं...
- मेरे सामने, मेरी राज्य सभा...
- सभी, मन, बुद्धि रुपी मंत्री पूरी तरह से सचेत हैं...
- कर्मेन्द्रियों रूपी कर्मचारी पूरी तरह अनुशासन में हैं...

➳ _ ➳ स्वयं को देह से अलग महसूस करती मैं आत्मा,

➳ _ ➳ उड़ चली सूक्ष्म वतन की ओर...

→ सूक्ष्म वतन में माँ के रूप में स्नेह लुटाते ब्रह्मा बाबा...

→ शक्तियों के रूप में शक्तिशाली बनाते शिव बाबा...

→ मैं आत्मा देख रही हूँ मेरा सम्पूर्ण फ़रिश्ता रूप...

→ आहिस्ता आहिस्ता ये रूप मुझमें समाता जा रहा है...

→ समाँ गया हैं मेरा सम्पूर्ण स्वरूप मुझमें ...

→ मुझ फरिश्तें से एक साथ अनेक फ़रिश्ते प्रकट होकर

→ विश्व ग्लोब पर फ़ैल गये हैं...

- पवित्रता का फ़रिश्ता...
- रहमदिल फ़रिश्ता...
- वरदाता फ़रिश्ता...
- स्नेह का फ़रिश्ता...

→ सभी आत्माओं की शुद्ध कामनाओं को पूरा करते हुए...

→ आत्माओं को बाप के वर्से अधिकारी बनाते हुए...

➳ _ ➳ चारों ओर से तृप्त आत्माओं की....

➳ _ ➳ 'यहीं है, यहीं हैं, और वही है' की पुकार सुनते हुए मैं आत्मा...

→ "मिल गये, मिल मिल गये",- की उल्लास भरी...

→ तीव्र पुकार...

→ "जो पाना था, सो पा लिया"- का हर तरफ...

→ गूंजता मधुर संगीत...

- शिव बाबा का परिचय पाकर...
- निहाल हुई ये आत्माए...

➳ _ ➳ सबको श्रेष्ठ योगी बनाने के लिए मैं आत्मा...

➳ _ ➳ पहुँच गयी हूँ परम धाम में...

→ शिव पिता से शक्तियों की किरणों को लेकर ...

→ स्वयं में समाते हुए...

→ जड़ से शक्तियों को स्वयं में समाकर...

→ कल्प वृक्ष के तने को पहुंचाते हुए...

- सम्पूर्ण निमित्त भाव
- और सेवा के बंधन से पूरी तरह मुक्त...
- कर्म करते हुए भी पूरी तरह...
- कर्मातीत अनुभव कर रही हूँ...